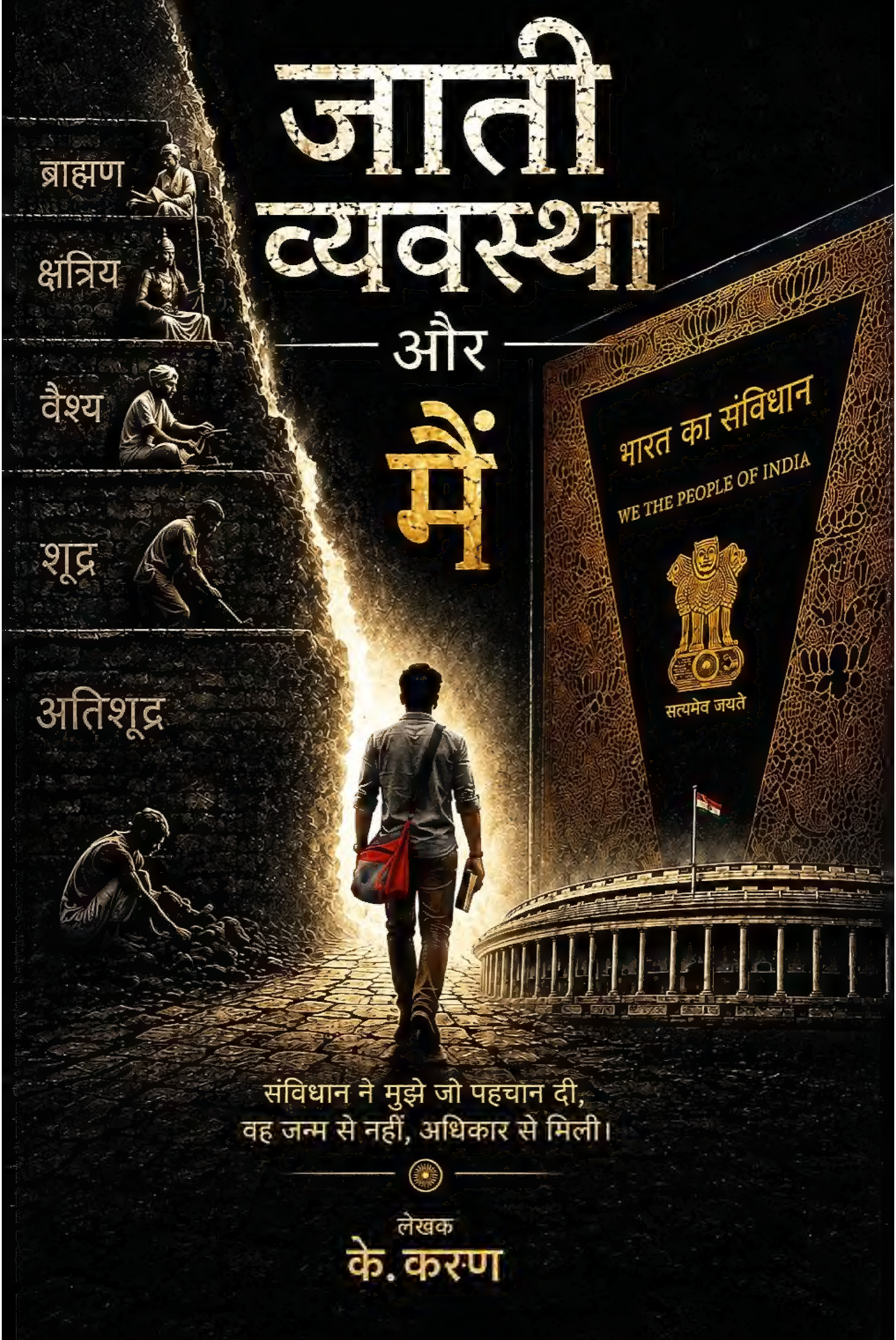

जाती
व्यवस्था
और
मैं
ब्राह्मण
क्षत्रिय
वैश्य
शूद्र
अतिशूद्र
भारत का संविधान
WE THE PEOPLE OF INDIA
सत्यमेव जयते
संविधान ने मुझे जो पहचान दी,
वह जन्म से नहीं, अधिकार से मिली।
लेखक
के. करण

जाति व्यवस्था और मैं

लेखक
के. करण

यह किताब वह आईना है,
जिसमें हम स्वयं को देख सकते हैं।

इसके पन्नों में उस सफ़र की झलक है,
जहाँ हज़ारों वर्षों से जाति ने
मानवता को रौंदा है।

यह किताब सवाल भी है, जवाब भी है,
और एक उम्मीद भी—कि
एक दिन हम सबकी पहचान
सिर्फ़ इंसानियत से होगी,
किसी जाति से नहीं।

लेखक
के. करण